नई दिल्ली। पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी के एकात्म मानववाद में जो परिकल्पना की गई थी, भारत का विकास उसी अवधारणा पर हो सकता है। दीनदयालजी की अवधारणा अनूठी थी। उनका मत एकदम ठीक था कि मनुष्य की प्रगति का अर्थ मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा की एक साथ प्रगति से होता है। यह एहसास होना चाहिए कि आर्थिक प्रणाली का उद्देश्य असाधारण उपयोग नहीं बल्कि उपलज़्ध संसाधनों का अच्छी तरह से नियंत्रित उपयोग होना चाहिए। प्रकृति के शोषण पर भरोसा करने के बजाय, हमें प्रकृति को बनाए रखने की आवश्यकता है। उन्होंने सभी के लिए रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य के संरक्षण के साथ संयमित खपत के जरिए पूंजी निर्माण के महत्व पर जोर दिया था। हम उसी रास्ते पर चलकर देश का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं। विज्ञान भवन में 23-24 सितंबर, 2017 तक दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा रिसर्च एंड इंफॉर्मेशन सस्टेनेबल डेवेलपमेंट विषय पर आयोजित संगोष्ठी में विभिन्न वज़्ताओं ने कही।

इस अवसर पर केन्द्रीय वित्तमंत्री श्री अरूण जेटली ने कहा कि भारत ने निरंतर विकास लक्ष्य (एसडीजी) के पूर्ण स्वामित्व का भी आश्वासन दिया है। ऐसा भारत ने वैश्विक प्रतिवद्धताओं को सज़्मानित करने के लिए नहीं बल्कि अपने नागरिकों के कल्याण और कल्याण को सुनिश्चित करने के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए किया है। भारत की आकांक्षाओं और कार्यों की उच्च मात्रा दूसरों से बेमिसाल है और भारत प्रतिमान के अपने रास्ते पर स्थिर है, वैचारिक और संचालन स्तर पर दोनों ही परिवर्तन करता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय 20वीं सदी के सबसे बड़े विचारकों में से थे। उन्होंने प्राचीन भारतीय दर्शन और अध्यात्मिकता में निहित मनुष्य और प्रकृति के एकीकृत अस्तित्व की धारणा की महिमा की थी। उन्होंने इस दर्शन को अभिन्न मानवतावाद कहा था। पुरातन ज्ञान के हिसाब से हर व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक कल्याण आवश्यक घटक हैं। उन्होंने रेखांकित किया कि भारतीय संस्कृति संघर्ष, विरोधाभास की बजाय परस्पर निर्भरता, सहयोग और संयम की नींव पर है। वह दृढ़ दृष्टि थी की विविधताओं के बावजूद भारत एकसूत्र वाला राष्ट्र रहा है। उन्होंने सुझाव दिया कि मनुष्य केवल समाज में एकीकृत नहीं है, वह दुनिया या प्रकृति का अभिन्न अंग है। भारतीय परंपरा में मां की पूजा की जाती है। प्रकृति प्रदूषित करना पाप समझा जाता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के मुताबिक, देश की अर्थ व्यवस्था की मुज़्य अवधारणा मनुष्य का सर्वांगीण विकास होना चाहिए। हमें एक ऐसी प्रणाली की जरूरत है जिसमें मनुष्य की अपनी बेजोड़ पहल और सामाजिक मूल्यों के कारण विकास को नई दिशा दी जा सके। उन्होंने व्यज़्ति, शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के अभिन्न अंग को अभिव्यज़्ति माना था। मनुष्य की प्रगति का अर्थ है मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा की एक साथ प्रगति। यह एहसास होना चाहिए कि हमारी आर्थिक प्रणाली का उद्देश्य असाधारण उपयोग नहीं करना चाहिए, लेकिन